International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-04-2022, Accepted: 07-05-2022, Published: 23-05-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 11-13

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन मे हिंदी के साहित्यकारों का योगदान

होशियार सिंह
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय मुल्थान, जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
मुंशी प्रेम चाँद, माखनलाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद दिवेदी, भारतेंदु हरिश्चंद्र, बाल कृष्ण शर्मा नवीन, सुभद्रा कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर आदि अनेकों हिंदी साहित्यकारों ने विभिन्न भाषाओं में राष्ट्रीयता की भावना से परिपूर्ण उत्कृष्ट साहित्य का सृजन किया। इन सबकी रचनाओं ने राष्ट्रीयता के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी साहित्यकार की रचनाओं ने उदासीन लोगों को जगाने और क्रूर अंग्रेज तानाशाही के विरुद्ध उठ खड़े होने का सफल आवाहन किया। हिन्दी साहित्यकारों की न जाने कितनी रचनाओं पर अंग्रेजों ने रोक लगाई न जाने कितना साहित्य जलाने की कोशिश की गई, परन्तु उनकी लेखनी सदा एक सच्चे क्रांतिकारी की भांति स्वतंत्रता आंदोलन में विस्फोटक का कार्य करती हैं। हिन्दी साहित्यकारों की लेखनी का यही जज्बा आजादी को प्रदान करने मे महत्वपूर्ण योगदान देता है।

मूल शब्दः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, हिंदी के साहित्यकार

प्रस्तावना
भारत को आजादी कड़ी मेहनत और अनेक बलिदानों के उपरान्त प्राप्त हुए है। भारत ने एक लम्बे समय से देश की आजादी के लिए संघर्ष किया। और अंत में 15 अगस्त 1947 को आजादी हासिल की। देश की आजादी के लिए कई लोग नीवं के पत्थर बन गये। उन लोगों का इतिहास में नाम तक नहीं आया है। आजादी का प्रथम आदोलन असफल इसलिए हुआ था क्योंकि उसमे समाज के प्रत्येक वर्ग ने मिलकर आन्दोलन में भाग नहीं लिया था। आन्दोलन में राष्ट्रीय नेतृत्व करने वाले क्रांतिकारियों का आभाव भी देखने को मिला था। देश के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन में विफलत इसलिए भी हाथ लगी क्योंकि भारत में भाषा विविधता होने के कारण देश के अलग – अलग भाषा वाले क्रांतिकार सही ढंग से देश के कोने कोने में फैले क्रांतिकारियों से सम्प्रेष्ण नहीं कर पाए थे। 1857 के बाद देश के सभी लोगों ने इस बात को जाना की राष्ट्र भाषा हिंदी ही वह भाषा है जो देश के लोगों को एक दूसरों के साथ जोड़ सकती है। हिंदी के साहित्यकारों ने देश के लोगो में आजादी की चेतना जगाने का नेक काम अपने कन्धों पर ले लिया। सच्चे अर्थों में देश की आजादी का संघर्ष का पहला ऐलान हिंदी की पत्र –पत्रिकाओं और हिंदी लेखकों की विविध कृतियों से ही हुआ है। 8 फरवरी 1857 को दिल्ली से अजीमुल्ला खान ने हिंदी और उर्दू में एक छोटा समाचार पत्र निकाला – पयामे आजादी। उसमे उस समय के राष्ट्रीय गीत की प्रथम पंक्तियाँ छपी थी,

" हम है इसके मालिक, हिन्दुस्तान हमारा,
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।"

'पयामे आजादी' की समस्त प्रतियों को अंग्रेजों ने जब्त करके जला दिया। इसकी प्रति को रखना और पढ़ना जुर्म माना जाने लगा। ऐसा माना जाता है कि इसकी एक प्रति मात्र बची हुई है जो अभी लंदन में उपलब्ध है। अंग्रजों के प्रति जब्त करने के अभियान ने भारतीय जनमानस को अंदर तक झंकझोर दिया। भारतीय लोगों और लेखकों के मन अंग्रेज सरकार के इस कृत्य के कारण व्यथित हुए। हिंदी लेखकों ने अपनी लेखनी की आवाज को दबने नहीं दिया। भारतेंदु हरिश्चंद्र जैसे लेखकों ने अपनी विविध कृतियों को रचकर आजादी के आन्दोलन को धार दी। 1868 ई० में 'कविवचन सुधा' नामक पत्रिका निकालकर जनमानस को गुलामी की पीड़ा से अवगत करवाया।' कविवचन सुधा' का उद्देश्य था' सत्य निज भारत गहे'। उस समय के प्रत्येक पत्र–पत्रिकाओं की शीर्षस्थ पंक्तियाँ देश और देशहित को प्रधानता देने वाली थी। हिंदी साहित्य के इतिहास में रीतिकाल के अंत तक काव्य ग्रंथों की शुरुआत ईश्वर वंदना से होती थी। परन्तु भारतेंदु युग के आरम्भ होने पर अब समस्त रचनाओं की शुरुआत मातृ वंदना या देश वन्दना से होने लगी। सही मायने में भारतेंदु युग में उसकी रचना' कवि वचन सुधा' से ही स्वदेशी आन्दोलन की शुरुआत हुई है। कोई भी साहित्य स्वांतः सुखाय न होकर जनहिताय होता है। युगल किशोर का' उदन्त मार्तंड' (1826) नील रत्न हलदार का बंगदूत, शिव प्रसाद सितारे हिन्द का' बनारस अखबार' जैसे पत्र भले ही समाचारों को प्रमुखता देते थे। साथ में उनके पत्रों में हिन्दुस्तानियों के हित की बात भी सर्वोपरी रहती थी। हिंदी भाषा का प्रथम दैनिक समाचार पत्र' सुधा वर्षण' ने तो खुलकर बहादुरशाह जफर के उस फरमान को छापकर विदेशी अंग्रेजी सत्ता को खुली चुनौती दे दी थी। भारतीय लोगों का अंग्रेजी सरकार की दमनकारी नीति के कारण दम घुट रहा था। लोग अपने ही देश में विदेशीयों के गुलाम हो गये थे। भारतेंदु सहित सभी लेख और कवि इस बात पर सहमत हो गए थे कि अंग्रेजी सरकार की दमनकारी नीति से आम जनता को अवगत करवाया जाए। भारतेंदु ने इस सम्बन्ध में' भारत दुर्दशा' कविता में अपने विचार व्यक्त करते हुए लिखा हैः

"अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी
पे धन विदेस चलि जात यहै अति ख्वारी।"

भारतेंदु युग वस्तुतः प्रत्येक क्षेत्र में पुनर्जागरण का युग है। सामाजिक' सांस्कृतिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक सभी क्षेत्रों में कुछ नयापन एवं सक्रियता दिखाई दे रही थी। भारतेंदु युगीन कवियों की देश भक्ति पूर्ण रचनाओं से लोगों की सोच क्षेत्रीयता से ऊपर उठकर वे सम्पूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने लगे।' हमारो उत्तम भारत देस' (राधा चरण गोस्वामी) और ' धन्य भूमि भारत सब रतननी की उपजावनी' (प्रेमधन) आदि काव्य–पंक्तियाँ इसी तथ्य को प्रकट करती हैं। देश के उत्थान और पतन के लिए उत्तरदायी परिस्थितियों पर प्रकाश डालकर इस युग के कवियों ने जनमानस में राष्ट्रीय भावना के बिज –वपन का महत्वपूर्ण कार्य किया। देश भक्ति की जो भावना बाद में मैथिलीशरण गुप्त –कृत ' भारत –भारती' में परिलक्षित हुई है। उसकी वास्तविक प्रेरणा भूमि भारतेंदु, प्रेमघन, प्रताप नारायण मिश्र,राधाकृष्ण दास आदि की कविताएँ ही है। भारतेंदु की ' विजयनी विजय वैजयंती' प्रेमघन की ' आनंद अरुणोदय' प्रताप नारायण मिश्र की ' महापर्व' और ' नया संवत' तथा राधा कृष्णदास की ' भारत बारहमासा' और ' विनय' शीर्षक कविताएँ देशभक्ति की प्रेरणा से युक्त है। इस विषय में उन्होंने अपनी कृतियों में कहीं व्यंग्योक्तियों के द्वारा प्रकट किया है तो कहीं अतीत के प्रेरणादायी प्रसंगों की चर्चा द्वारा नवयुवकों को पुनर्जागरण का मन्त्र दिया है। अंग्रजों की आर्थिक शोषण की नीति ने देश में महंगाई, भूखमरी,महामारी तथा करों के बोझ को अत्यधिक बढ़ा दिया था जिसके कारण लोगों का जीना हराम हो गया था। प्रताप नारायण मिश्र ने समाज की पीड़ा को व्यक्त करते हुए लिखा है,

"तबही ल्ख्यों जहं रह्यो एक दिन कंचन बरसत
तहं चौथाई जन रुखी रोटीहूँ को तरसत
जहं आमन की गुठली अरू बिरछ्न की छाले
ज्वार चुन महं मेलि लोग परिवारहिं पालैं
नौन तेल लकरी घासू पर टिक्स लगे जहं
चना चिरौंजी मोल मिलें जहं दीन प्रजा कहं।। "

सन 1900 ई ० से 1920 ई ० तक का हिंदी साहित्य के कालखंड को महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम से जाना जाता है। भारतेंदु युग में जिन काव्य प्रवृत्तियों का सूत्रपात हुआ था द्विवेदी युग में उन्हीं प्रवृत्तियों को विकसित करते हुए नवजागरण का सन्देश दिया गया। राष्ट्रीयता, नवजागरण, देश–प्रेम, स्वदेशाभिमान, समाज –सुधार, आदर्शवाद, नैतिकता, नवजागरण के स्वर द्विवेदी युगीन कविता में अधिक मुखर है। आर्य समाज और ब्रम्हा समाज का प्रभाव साफ तौर पर द्विवेदी युग की रचनाओं में देखने को मिलता है। द्विवेदी युगीन साहित्यकारों ने देश के हालात के साथ देश के आत्मोत्सर्ग के लिए तैयार करते हुए स्वतंत्रता प्राप्ति की राह को भी दिखाया। इस कालखंड की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों ने भी साहित्यकारों को नवजागरण का सन्देश दिया। बाल गंगाधर तिलक, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धा नन्द, मदन मोहन मालवीय जैसे नेताओं ने भी देशवासियों के स्वाभिमान को जागृत करने में विशेष भूमिका का निर्वहन किया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से अनेक हिंदी साहित्यकार और कवि हुए जिन्होंने उनके आदर्शों को आत्मसात होकर अपनी भावी कृतियों को सृजित किया। इनमें प्रमुख हैं–मैथलीशरण गुप्त,गोपाल शरण सिंह, गया प्रसाद स्नेही,लोचन प्रसाद पाण्डेय आदि। इनके अलावा इस काल के अन्य महत्वपूर्ण कवि एवं साहित्यकार है – अयोध्याय सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' नाथू राम शर्मा' शंकर', रायदेवी प्रसाद पूर्ण, राम नरेश त्रिपाठी,राम चरित उपाध्याय आदि। कविवर शंकर ने' बलिदान –गान' में पराधीनता को सबसे बड़ा अभिशाप बताते हुए कहा थाः

"देशभक्त वीरो, मरने से नेक नहीं डरना होगा
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगाः"

इस काल के सभी साहित्यकारों ने स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग और विदेशी वस्तुओं के वहिष्कार पर उन्होंने लगातार बल दिया। मातृभूमि की महिमा का गान भी देशभक्ति का ही अंग है,जिसकी ओर अनेक कवियों ने आग्रहपूर्वक ध्यान दिया है। मैथिलीशरण गुप्त की कृति ' भारत –भारती' ने हिंदी भाषियों में जाति और देश के प्रति गर्व और गौरव की भावनाएं प्रबुद्ध की और तभी से ये राष्ट्र कवि के रूप में विख्यात हुए । गुप्त जी मातृभूमि को केवल भूमिखंड नहीं अपितु सगुण मूर्ति सर्वेश को मानते है।
सत्यनारायण कविरत्न की कविताओं में भी युग चेतना के प्रभाव को देखा जा सकता है। 'सब मिलि पुजिय भारत माई', 'बन्दौं भारत भुवि महतारी' आदि पदों में उन्होंने राष्ट्रीय उद्गारों को प्रकट किया हुआ है। उनके भक्तिपरक पदों में कहीं – कहीं देश की दुर्दशा का भी उल्लेख किया हुआ है। इसी प्रकार ' भ्रमरदूत' के परम्परागत प्रसंग में भी उन्होंने देश प्रेम को दिखाते हुए लिखा है,

" जे तजि मातृभूमि सों ममता, होत प्रवासी
तिन्हें बिदेशी तंग करत दे विपदा खासी
नहिं आये दृ निरदय दई,आये गौरव जाए
सापं –छुछुन्दर गति भई,मन ही मन अकुलाय
रहे सब के सबै।। "

जयशंकर प्रसाद की प्रसिद्ध कृति करुणालय (1912) में भारत के गौरव को परिभाषित किया गया है। जय शंकर प्रसाद ने अपने ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से भारत के पौराणिक गौरव को दिखा कर देशवासियों को गुलामी की जंजीरों को तोड़ने की प्रेरणा दी। जिस देश के नागरिक अपने अतीत से कट जाते है ऐसे देशों का नामों निशान विश्व के मानचित्र से मिट जाया करता है। अंग्रेज भारत के साहित्यकारों को स्वतंत्र तौर पर शासन और प्रशासन के विरुद्ध लिखने के लिए रोकते थे। मुंशी प्रेम चंद की कृति ' सोजे वतन' (1907) को भी अंग्रेजों ने जब्त कर लिया था। मुंशी जी ने इस कृति में अंग्रेजों की खुली खिलाफत की हुई थी। उनकी कृति को पढ़ना,प्रकाशित करना या अपने पास रखना तक अपराध घोषित किया गया। भारत में इस घटना के उपरांत हिंदी के सभी साहित्यकारों ने अपनी देशभक्ति परक रचनाओं को काल्पनिक नामों से लिखा या देश भक्ति का स्वर अपनी कृतियों में अप्रत्यक्ष तौर पर प्रदर्शित किया। मुंशी प्रेम चन्द को उर्दू में नबाव राय काल्पनिक नाम से रचनाएं लिखनी पड़ी। अधिकांश रचनाकार अंग्रेजो की कुदृष्टि से बचने के लिए इसी तरीके को अपना रहे थे। बालमुकुंद गुप्त हिंदी साहित्य में अपनी प्रसिद्ध कृति' शिव शम्भु का चिट्ठा' के लिए जाने जाते है। ये चट्ठे ' भारतमित्र' में 1904 – 1905 में प्रकाशित हुए थे। उन्होंने ये चट्ठे तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन को सम्बोधित करते हुए लिखे हुए थे। इसलिए लेखक ने कर्जन के भारत विरोधी कारनामों का ओजपूर्ण,तीखी एवं व्यंग्यात्मक शैली में प्रहार किया है। इन चिट्ठों के अलावा उन्होंने तत्कालीन साहित्यिक,राजनीतिक, भाषा सम्बन्धी तथा राष्ट्रीय महत्व के अन्य प्रश्नों पर भी निर्भीकता पूर्वक लेखनी चलायी है। छायावादी कवियों में माखन लाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बाल कृष्ण शर्मा नवीन और सुभद्रा कुमारी चौहान आदि ने केवल राष्ट्रप्रेम से प्रेरित कविताएँ ही नहीं लिखी अपितु साथ में देश की आजादी के लिए कंधे से कंधा मिलाकर क्रांतिकारियों का साथ भी खुलकर दिया। माखन लाल चतुर्वेदी ने' कैदी और कोकिला' शीर्षक कविता में अपनी अनुभूति को एक उच्चतर और लोक सामान्य भावभूमि के स्तर पर व्यक्त करने का प्रयास किया है,

"क्या? देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियां क्यों? यह ब्रिटिश राज्य का गहना।"

ब्रिटिश राज में बिना किसी दलील,वकील के किसी को भी बिना मतलब के जेल में डालने की आज्ञा थी। भारतीय लोग अंग्रेजो के काले कानूनों से त्रस्त थे। हिंदी छायावादी कवियों ने राम,कृष्ण, भीम,अर्जुन,हरिश्चंद्र आदि प्राचीन युग पुरुषों के जीवन चरित्रों के उदारहण देकर जनता में विश्वास और आस्था पैदा करने का प्रयत्न किया। ताकि वे विदेशी सत्ता के विरोध उठ खड़े हो सके। सुभद्रा कुमारी चौहान ने ' झासी की रानी' कविता रचकर जन – जन तक स्वदेश प्रेम और झासी की रानी की तरह देश पर मर मिटने के लिए जनता को प्रेरित किया। बाल कृष्ण शर्मा नवीन के काव्य गंथ – 'अपलक', 'रशिम रेखा', 'क्वासी', तथा 'हम विषपायी जन्म के' में देश प्रेम और प्रणय दोनों भावों की शक्तिशाली अभिव्यक्ति मिलती है। हिंदी के प्रगतिवादी,प्रयोगवादी साहित्यकारों ने भी हिंदी में अनेक कहानियाँ,कविताएँ उपन्यास, निबंध आदि रचकर भारतीय लोगों में सामाजिक राजनैतिक, सांस्कृतिक, और राष्ट्रीय चेतना को व्यापक बल प्रदान किया। मातृभूमि के लिए सर्वस्व बलिदान स्वार्थ –त्याग तथा पारस्परिक वैमनस्य को दूर करने की अमोघ प्रेरणा देकर इन कवियों ने असंकीर्ण राष्ट्रीय भावना को विकसित किया तथा तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलनों को बल प्रदान किया गया। संक्षेप में कहे तो हिंदी के समस्त साहित्यकारों के सामूहिक प्रयासों से ही भारतीय जनमानस में राष्ट्रीय चेतना का संचार हुआ है। लोग अपने स्वार्थ को त्यागकर देश धर्म पर मर मिटने की कसमें खाने लगे थे। लोगों को अब विश्वास हो चला था कि अंग्रेजों के रहते हुए भारतीय लोगों का कदापि भला हो ही नहीं सकता है। हिंदी के भारतेंदु हरिश्चंद्र,मैथलीशरण गुप्त,रामधारी सिंह दिनकर,माखनलाल चतुर्वेदी,सुभद्रा कुमारी चौहान आदि अनेक हिंदी कवियों ने अपनी ओजपूर्ण कृतियों से देश भक्तिपूर्ण भावों से नागरिकों को अभिप्रेरित किया। लोगों ने बढ़ चढ़कर देश के आदोंलन में भाग लिया। भारतीय लोगों की एकता के आगे अंग्रेज देश की सत्ता छोड़ने के लिए मजबूर हुए। परिणाम स्वरूप 15 अगस्त 1947 को सभी देशवासियों को आजादी का अमृत प्राप्त हुआ। भारतीय लोग देश के क्रांतिकारियों और हिंदी के उन तमाम साहित्यकारों के सदा ऋणी रहेंगे जिन्होंने देश की आज़ादी के लिए अपना अमूल्य योगदान किसी न किसी रूप में दिया है।

संदर्भ

1. डॉ० मीना गौतम,स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी,पृष्ठ – 45
2. डॉ० अशोक तिवारी, प्रतियोगिता साहित्य सीरिज, पृष्ठ – 63
3. नागेन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, भारतेंदु युग, पृष्ठ – 442
4. वही, पृष्ठ – 477
5. वही, पृष्ठ – 493
6. वही, पृष्ठ – 519